आधाफुल के और भी कमाल के किस्से हैं।
सब पढ़ डालो।
एक भी किस्सा छूट न जाए।

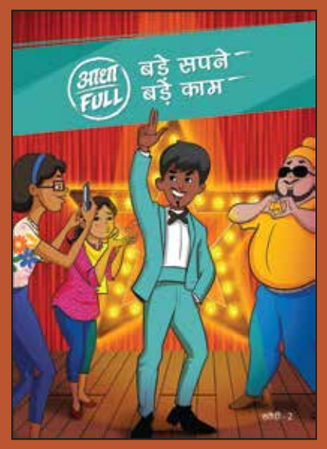

Developed and created by **BBC Media Action**
in partnership with **UNICEF, DOVE** and **the Center for Appearances Research**

आधा FULL ये नाटक नहीं

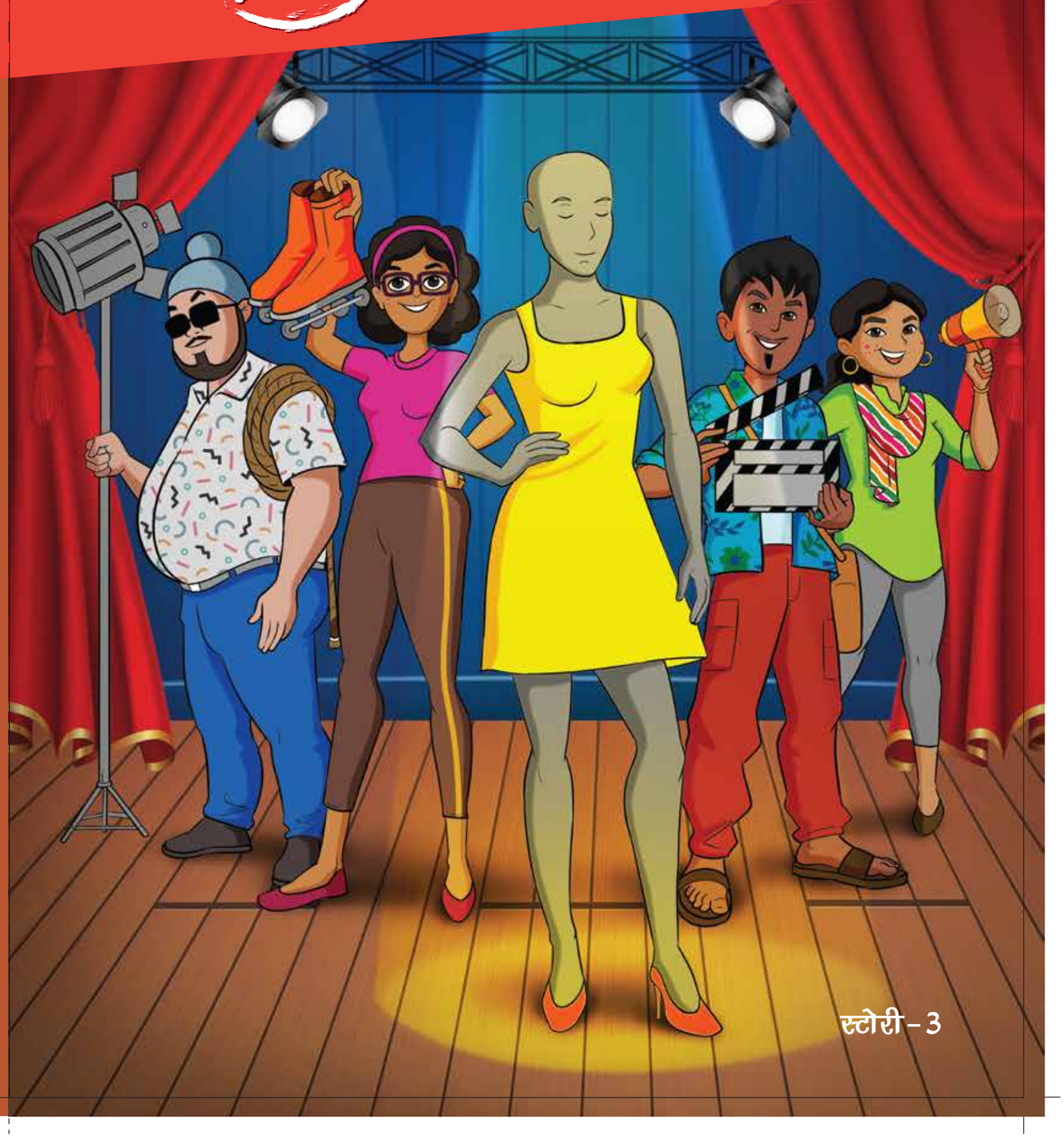

स्टोरी – 3

हाई! मैं हूं तारा।
15 साल की हूं और
दसवीं में पढ़ती हूं। कुछ लोग
मुझे कहते हैं वॉकिंग-टॉकिंग
एन्साइक्लोपीडिया! मेरा स्लोगन?

तारा

तारा कभी झूठ नहीं बोलती!

हैलो! मैं हूं किटी। उम्र 18!
यानी मैं अपना स्कूटर भी चला सकती
हूं और वोट भी दे सकती हूं। मैं हूं
कॉलेज के पहले साल में। किसी को मैं
लगती हूं चुलबुली, किसी को समझदार।
पर एक बात तो सब मानते हैं

किटी

मेरे लिए नथिंग इज इंपॉसिबल

हैलो। मैं हूं बल्लू। किटी के साथ
कॉलेज में हूं और आधाफुल गैंग का
नया मैंबर हूं। मेरी आंखे बचपन में
ही चली गई थीं। पर कोई बात नहीं!

बल्लू

सुनना और सूंघना हैं मेरी सुपरपावर!

हाई-लो दोस्तों।
मैं आपका अपना अदरक।
17 साल का हूं और ओपन कॉलेज से
पढ़ाई कर रहा हूं। अब तो मेरे बैग में
हमेशा किताबें भरी रहती हैं,

अदरक

और दिमाग में आईडियाज

कॉलेज कैंटीन और यार-दोस्त

कैंटीन

कॉलेज थियेटर ग्रुप
के मेंबर्स की एंट्री!

सुनो! सुनो! सुनो! इंटर-कॉलेज थिएटर कंपटीशन के लिए एक मजेदार
नाटक तैयार किया है। लड़कियों के लिए भाग लेने का सुनहरा मौका!

इंटरेस्टेड
है कोई?!

पर ये
दोनों क्यों
डरी-सहमी
लग रही है?

बल्लू के तेज कान से कुछ नहीं छुप सकता।

अभी तो जोश है... बाद में वही सहना पड़ेगा जो हमने सहा। आज भी ये लोग आस-पास होते हैं तो डर लगता है।

किटी को दाल में कुछ काला लग रहा है!

इनके पहले की एक्ट्रेस कहां जाती हैं... ये हर दूसरे दिन नई ढूंढ रहे हैं।

बल्लू के पास शायद जवाब हो?

3 दिन बाद, अपने अड्डे पर! पर ये कौन... वही लड़कियाँ जिन्होंने नाटक के लिए हाथ उठाया था!

कैसी चल रही है इंटर कॉलेज थिएटर कंपटीशन की तैयारी?

थिएटर ग्रुप छोड़ दिया हमने... तीन दिनों में ही।

क्यों?! तुम दोनों तो बहुत एक्साइटेड थीं!

प्रेक्टिस का टाइम नहीं मिल रहा है।

एक जरूरी कॉलेज प्रोजेक्ट मिल गया है, पहले वो करना है।

किट्टी और बल्लू अपने दोस्तों को कैंटीन वाली घटना बताते हैं।

इसी के लिए हमें शक है कि शायद...

थिएटर ग्रुप वाले लड़कियों से सही सलूक नहीं कर रहे हैं।

तो फिर इन्होंने सच क्यों नहीं बोला... और वो दूसरी लड़कियों ने इन्हें रोका क्यों नहीं?

क्योंकि अगर वो शिकायत करती हैं, तो उन्हें ये ऐहसास दिलाया जाता है कि ये उनकी ही गलती है। घर पर बोला जाता है कि ये सब सहो और भूल जाओ।

और उनको बोला जाता है कि ये सब बड़ी बात नहीं, ये सब के साथ होता है। लड़कियों को बेजान वस्तु जैसा समझा जाना समाज को सामान्य लगता है।

और लड़कियाँ इसीलिये चुप-चाप सब सहती रहती हैं, और सच बोलने से डरती हैं।

अगले दिन... किटी और बल्लू की क्लास। और वही थिएटर ग्रुप की फिर एंट्री।

हमें हमारे नाटक के लिए फीमेल एक्टर्स की जरूरत है... कोई है?

सच की खोज में किटी की एंट्री! और इन सब से अंजान... शालू।

शाम को, किटी थिएटर ग्रुप के साथ प्रैक्टिस में...

वेलकम! मैं ईशान, इस थिएटर ग्रुप का लीडर।

माना ये रिहर्सल है, पर मेकअप तो कर ही सकती हो!

जितनी अच्छी तुम लगोगी, उतनी अच्छी हम एक्टिंग कर सकेंगे!

तुम तो जिम-शिम करते हो, स्लीवलेस टी-शर्ट क्यों नहीं पहनते? हमें भी तो कुछ अच्छा दिखना चाहिए ना!

किटी की खोज सफल रही... अगले दिन।

हमारा शक सही निकला... कि क्यों लड़कियाँ बार-बार थिएटर छोड़ देती हैं।

वहां अपनी बातों और हाव-भाव से कुछ लोग उन्हें ऐसा महसूस कराते हैं, जैसे वो इंसान नहीं, बस कोई इस्तमाल करने वाली वस्तु हो।

और ऑनलाइन ग्रुप में भी इस तरह की तस्वीरें और सेक्शुअल टिप्पणियां साझा की जाती हैं।

क्या अपने नाटक की हीरोइन ऐसा कुछ नहीं पहन सकती?!

अदरक का दिमाग चल गया!

बन गया प्लान!

फाइनल रिहर्सल से दो दिन पहले...

प्लान तैयार है? मैने अदरक और तारा का नाम रिहर्सल में मदद करने वालों की लिस्ट में डाल दिया है।

और जो-जो लड़कियाँ थिएटर छोड़ कर गई थी, मैंने उन्हें बुला लिया है...

फिकर नॉट! मैंने भी सब इकट्ठा कर लिया है!

फुल ड्रेस रिहर्सल का दिन आ गया!

अदरक और तारा अपनी-अपनी पोजीशन पर तैनात!

पर्दा उठा... सब कलाकार स्टेज पर लेकिन किटी और शालू गायब

ये किसकी ड्रामेटिक एंट्री?!

तो ये तारा और अदरक के हाथों का कमाल है।

ये क्या है? किटी और शालू की जगह? ये तो नाटक में नहीं हैं।

नाटक में ट्विस्ट!!! भांडा फोड़ने का टाइम!

किटी और पुरानी एक्ट्रेसेज की एंट्री!

अब जो आप देखने वाले हैं, वो नाटक नहीं असलियत है।

हम सब कभी ना कभी इस नाटक का भाग रहे हैं। पर एक-एक करके छोड़ते भी रहे हैं। पता है क्यों?

क्योंकी हमें लगता था की इन पुतलों और हम में कोई फर्क नहीं है।

रिहर्सल के समय पर कभी सेक्शुअल चुटकुले मार के, कभी हरकतों से, हमें इंसान नहीं, बेजान वास्तु जैसा महसूस कराया जाता था।

मुझे तो खुद को आईने में देख कर शर्म आने लगी है... क्या मेरी पहचान बस मेरा मेकअप और मेरी ड्रेस है?

मैंने अपनी मम्मी को बताया तो वो बोली की ये तो छोटी सी बात है और हमारे समाज में जरूरी है कि लड़कियां खूबसूरत लगें। तुम वो करो जो समाज चाहता है। क्या मेरा क्लास टॉपर होने का कोई महत्व नहीं?

अगर हमें बेजान वास्तु जैसा महसूस कराया जाएगा... तो फिर बेजान वस्तु को ही ले लो हमारी जगह।

हमें अपनी गलती का ऐहसास हो गया है... सबकी वैल्यू उनके हुनर, उनके काम से होनी चाहिए। जाने-अनजाने में हमने अपने शब्दों और हरकतों से तुम सबको असुरक्षा और शर्मिंदा महसूस कराया।

वस्तुओं के साथ तुलना सिर्फ लड़कियों को ही नहीं, लड़कों को भी सहनी पड़ती है। जैसे कि...

सब को गलती का ऐहसास हुआ।

मैंने ये नाटक इसी के लिए छोड़ा था... पर क्योंकि तुम सब अपनी गलती मान चुके हो, इसलिए मैं अपना रोल वापस लेने के लिए तैयार हूं!

और इसी मजाक के साथ नाटक शुरू हुआ... असली कलाकारों के साथ

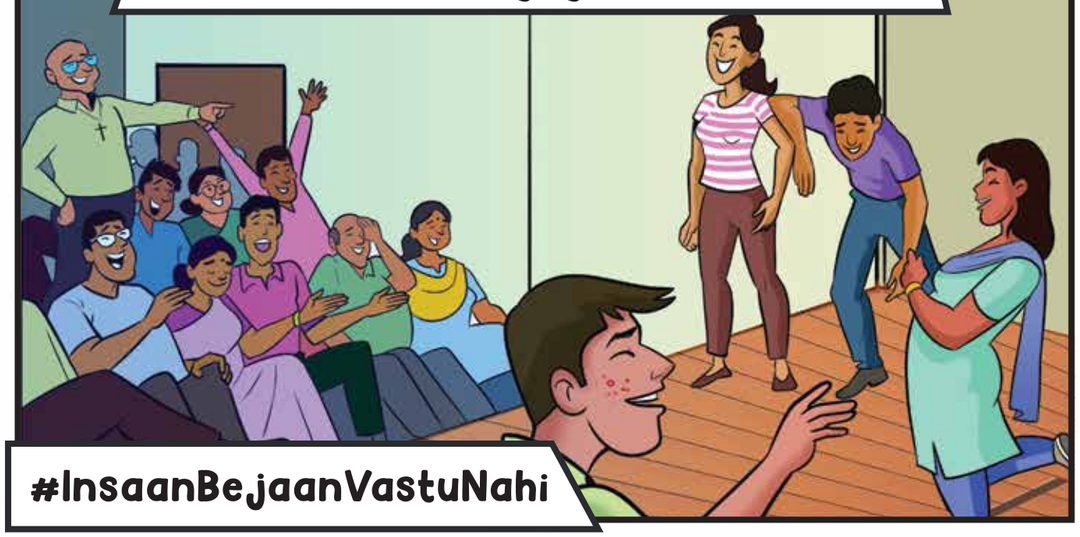

#InsaanBejaanVastuNahi

परिचय

हमने हर एक ग्राफिक नॉवल के पूरा होने के बाद की जाने वाली कुछ एक्टिविटीज तैयार की हैं। ये एक्टिविटीज फेसिलिटेटर यानी चुने गए ग्रुप लीडर द्वारा करवाई जाएंगी। फेसिलिटेटर को यह ध्यान रखना होगा कि सभी लड़के और लड़कियाँ उपस्थित हों और आराम से बैठें।

- एक बार ग्राफिक नॉवल पूरा हो जाने के बाद, फेसिलिटेटर को हर एक एक्टिविटी को धीरे-धीरे पढ़ना होगा, भाग लेने वाले सभी लड़के-लड़कियों को इसका मतलब समझाना होगा और यह तय करना होगा कि वे सभी लोग हर एक्टिविटी में भाग लें।

- ध्यान रखें कि सभी भाग लेने वालों को हर एक्टिविटी पर जवाब देने का मौका मिले।

- जवाब देते समय, ध्यान रखें कि सभी भाग लेने वाले, अपने हाथ ऊपर उठाएं, और फिर एक-दूसरे के जवाब को काटे बिना एक-एक करके जवाब दें। ऐसी स्थिति में, फेसिलिटेटर को यह ध्यान रखना होगा कि सभी भाग लेने वालों को अपने जवाब के लिए पूरा समय मिले।

- अगर कोई जवाब नहीं दे रहा है, तो फेसिलिटेटर को विशेष रूप से उनसे समय लेने, ग्राफिक नॉवल के मुख्य संदेशों पर सोचने और एक्टिविटी पर जवाब देने के लिए कहना होगा।

- सभी भाग लेने वालों को ग्राफिक नॉवल के मुख्य संदेशों पर सोचने और अपने निजी जीवन के ऐसे (ग्राफिक नॉवल से मेल खाने वाले) अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें जो मुख्य संदेशों से मेल खाते हों।

सेक्शुअल और खुद का वस्तुकरण

सोचें, समझें और बताएं

60 सेकंड लें और ऐसे मौकों के बारे में सोचें जहां अतीत में आपके आस-पास के लोगों से किसी ने एक वस्तु की तरह व्यवहार किया हो।

1. उस व्यक्ति ने इस स्थिति पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया दी?

2. या वहां खड़े या इस घटना को देखने वाले किसी व्यक्ति ने, ऐसा करने वालों को रोका?

3. **सही या गलतः**
   लोगों के साथ इंसानों जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, न कि (सेक्शुअल प्लेजर) यौन सुख की वस्तु के रूप में।

4. **सही या गलतः**
   जिस व्यक्ति से गलत बातें बोली जा रही हैं, उसे सभी बातों को स्वीकार करना चाहिए, भले ही वो बातें उसे एक इंसान नहीं, एक वस्तु जैसा महसूस कराएं।

4. **सही या गलतः**
   जिस व्यक्ति से गलत बातें बोली जा रही हैं या जिसे वस्तु जैसा महसूस करवाया जा रहा है, उसे ऐसा करने वाले व्यक्ति को बुलाकर, उसका विरोध करना चाहिए।

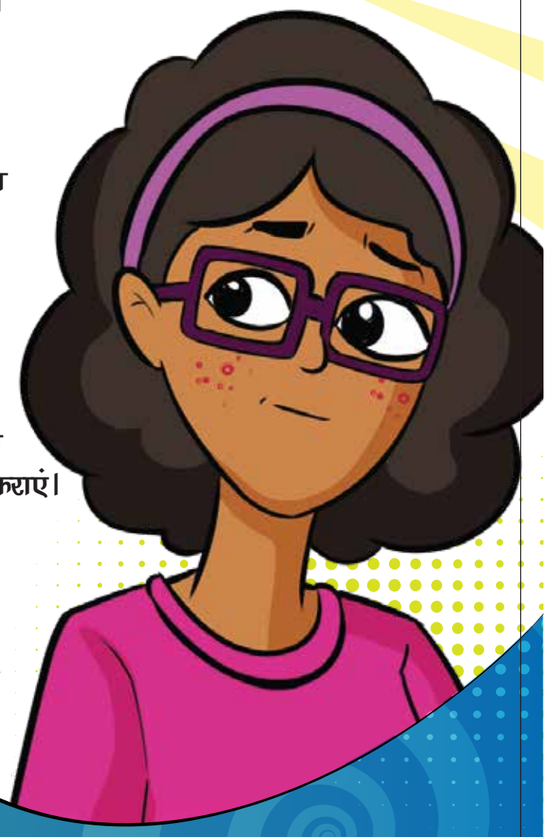

आप क्या करेंगे?

मान लें कि आप ऐसी ही स्थिति में हैं जैसी ग्राफिक नॉवल में बताई गई है। आपको एक ऐसे ही नाटक में भाग लेना था, लेकिन आखिर में आप अपने साथी कलाकारों द्वारा आपत्तिजनक व्यवहार का शिकार हो गए। आप इनमें से कौन सा कदम उठाएंगे और क्यों:

1. आपको वस्तु की तरह महसूस कराने वालों के नाम उजागर करके खुद उनसे निपटेंगे

2. इस मुद्दे पर अपने साथियों या सहायता समूह के सदस्यों के साथ चर्चा करेंगे और उनकी मदद लेंगे।

3. उन लोगों से दूरी बना लेंगे जो आप पर गलत टिप्पणियां करते हैं।